नौनिहालों की घर आधारित देखभाल: आज की महत्वपूर्ण ज़रूरत

क्या आप जानते हैं कि बच्चा गर्भ से सीखना शुरू कर देता है और उसके मस्तिष्क का ८०% विकास शुरूआती २ सालों में हो चुका होता है? इन शुरुआती सालों में बच्चा जो भी सीखता है- समझता है, वही उसके आने वाले जीवन का आधार बनता है। विभिन्न वैज्ञानिकों ने प्रमाण के साथ इस बात पर जोर दिया है कि बच्चे के मस्तिष्क का सबसे तेज़ विकास पहले १००० दिनों में होता है। इस महत्वपूर्ण अवधि के दौरान उत्तरदायी देखभाल (रेस्पोंसिव केयरगिविंग) बच्चों के लिए उम्र अनुसार खेल और प्रारम्भिक शिक्षण हस्तक्षेपों के माध्यम से बच्चों के संज्ञानात्मक (कोग्नेटीव), सामाजिक, भावनात्मक और शारीरिक विकास को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकती है।

जीवन के पहले तीन वर्षों में एक मजबूत शुरुआत के कई लाभ हैं: बेहतर स्वास्थ्य परिणाम, बेहतर स्कूल की तैयारी, ड्रॉपआउट दरों में कमी और आजीवन सीखने में वृद्धि। यह सभी बच्चों को उनकी सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना, समान अवसर देकर सामाजिक समानता में भी योगदान देता है।

चूँकि ये वो समय है, जब बच्चा अपने परिवार और माता-पिता के ही सबसे करीब होता है, ऐसे में गृह आधारित प्रारम्भिक बाल देखभाल, शिक्षा और विकास (होम बेस्ड एर्ली चाइल्ड केयर, एजुकेशन और डवलपमेंट) एक महत्वपूर्ण रणनीति के रूप में उभर कर सामने आई है। ये वो बच्चे हैं, जो न तो स्कूल जाते हैं और न ही किसी आंगनवाड़ी केंद्र में शिक्षा प्राप्त करते हैं अर्थात औपचारिक प्री-स्कूल प्रणालियों के दायरे से बाहर होते हैं। ऐसे में गृह आधारित उत्तरदायी देखभाल न केवल शिशुओं और बच्चों की विकासात्मक आवश्यकताओं को पूरा करता है, बल्कि देखभाल करने वालों को अपने बच्चे के विकास में सहायता करने के लिए ज्ञान और कौशल से मज़बूत भी बनाता है।

नन्ही उम्र की ज़रूरतें भी नन्ही:

ये वो उम्र है, जब बच्चे की पोषण, स्वास्थ्य के साथ अन्य नन्ही- नन्ही ज़रूरतें भी होती है। यही वो उम्र है, जब बच्चा स्पर्श से स्नेह-प्रेम को महसूस करता है , आवाज़ की तरफ अपने शरीर और चेहरे के हावभाव से अपनी प्रतिक्रिया देता है। ऐसे में ज़रूरी है कि बच्चे के साथ भरोसा और लगाव बनाने के लिए उसकी उत्तरदायी देखभाल हो; शारीरिक विकास के लिए उचित पोषण (नियमित स्तनपान और 6 माह की उम्र के बाद ठोस आहार) और नियमित स्वास्थ्य देखभाल हो; शुरूआती संचार को बढ़ावा देने के लिए भाषा का प्रदर्शन और बातचीत की शुरुआत हो। इस उम्र में बच्चे अपने देखभाल करने वालों और आस-पास के वातावरण के साथ बातचीत के ज़रिये सीखते हैं। वे हर उस चीज़, घटना, व्यवहार को महसूस करते हैं, जो उनके साथ या उनके आस पास घटित हो रही होती है। यही सब मिलकर बच्चे का आधार (फाउंडेशन) तय करती है।

कैसी स्थिति है फ़िलहाल

भारत ने हाल ही के वर्षों में आरंभिक बाल विकास पर काफी उल्लेखनीय प्रगति की है। आंगनवाड़ी केन्द्रों और उसकी सेवाओं-सुविधाओं में विस्तार, गर्भवती- धात्री महिलाओं के पोषण और स्वास्थ्य की देखभाल (प्रधानमंत्री मातृत्व वंदना योजना, जननी सुरक्षा योजना आदि), राष्ट्रीय शिक्षा नीति (२०२०), पोषण २.० , राष्ट्रीय आरंभिक बाल विकास फ्रेमवर्क २०२२ जैसी कई पहल और नवाचारों ने काफी बदलाव लाया है। किन्तु अगर थोड़ा सा करीब से देखा जाए तो आरंभिक बाल विकास शिक्षा में ज्यादातर नवाचार ३ साल से बड़े बच्चों पर अधिक फोकस करते हैं। अभी भी नन्हे शिशुओं और बच्चों के साथ देखभाल करने वालों के साथ इन अभियानों की सीमित पहुँच है। शुरूआती सालों के विकास पर उतना ध्यान नहीं दिया गया है, जितनी आवश्यकता है। घर पर बच्चों के साथ अलग अलग उम्र में कैसे पेश आया जाए- कैसे खेला जाए और कैसे शामिल हुआ जाए; इस से जुड़ी जानकारी और सामग्री का भी नितांत अभाव महसूस होता है। बाज़ार में मिलने वाली सामग्री का व्यय सभी नहीं वहन कर सकते। आंगनवाड़ी केन्द्रों के बाहर आंगनवाड़ी कार्यकताओं की भूमिका को भी विस्तार दिए जाने की ज़रूरत है; किन्तु यहाँ यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि वे पहले से अपने अत्यधिक कार्यों की वजह से स्वयं को काफी परेशान महसूस करती है।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि जितने भी पाठ्यक्रम जारी हुए हैं, उनमें सबसे कम ध्यान ३ साल से छोटे बच्चों पर दिया गया है। अधिकांश पॉलिसियां और पाठ्यक्रम अभी भी शाला पूर्व शिक्षा (३-६ साल) आयु समूह की ओर झुकी हुई है। ३ साल से कम आयुवर्ग के लिए गृह आधारित आरंभिक शिक्षा और उत्तरदायी देखभाल के लिए अलग से कोई बजटीय प्रावधान फ़िलहाल नहीं किये गए हैं। आंगनवाड़ी कार्यकर्ता और आशा जैसी ज़मीनी कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण कार्यक्रमों की भी फ़िलहाल कमी है। ०-३ साल तक के विकास और देखभाल करने वाले की भागीदारी को ट्रेक करने के लिए मज़बूत संकेतक (इंडिकेटर) भी फ़िलहाल राष्ट्रीय स्तर पर तय नहीं किये गए हैं। छोटे बच्चों के विकास से जुड़े विभिन्न मंत्रालयों और विभागों (जैसे स्वास्थ्य, महिला बाल विकास, नगरीय विकास, समाज कल्याण आदि) के बीच उचित तालमेल को और बेहतर करने की भी ज़रूरत महसूस होती है।

प्रारंभिक विकास में पुरुष देखभालकर्ताओं की भूमिका

भारत में, बच्चों के पालन-पोषण की ज़िम्मेदारियाँ मुख्य रूप से महिलाओं पर आती हैं। हालाँकि, शोध से पता चलता है कि पुरुष देखभालकर्ताओं (पिता, दादा और चाचा) का बाल विकास पर गहरा सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। सक्रिय पुरुष भागीदारी बच्चों में भावनात्मक सुरक्षा, भाषा कौशल और स्कूल की तत्परता को बढ़ाने में योगदान देती है। पुरुष देखभालकर्ता बातचीत का एक अनूठा तरीका लाते हैं जो बच्चे के सीखने के माहौल और भावनात्मक दुनिया को व्यापक बना सकता है। उनकी भागीदारी परिवार के सामंजस्य को भी बेहतर बनाती है, देखभाल की गुणवत्ता को बढ़ाती है और पारंपरिक लिंग मानदंडों को चुनौती देती है।

क्या किया जा सकता है ?

- ज़मीनी स्तर पर होने वाले नियमित स्वास्थ्य- पोषण कार्यक्रमों में ३ साल तक के बच्चों के लिए उत्तरदायी देखभाल, स्टिमुलेशन, आयु अनुसार खेल और विकास सम्बन्धी गतिविधियों पर स्वास्थ्य दिवस, मासिक बैठकों, टीकाकरण दिवस, गृह भ्रमण (होम विजिट्स) के दौरान चर्चा होनी चाहिए।
- छोटे बच्चों के लिए आयु अनुसार (०-६ माह; ६-१८ महीने; १८-३६ महीने) खेल किट विकसित किये जाए और उन्हें फिल्ड में प्रसारित करें। इनमें ऐसी सामग्री का उपयोग हो , जो घरों और रसोई में आसानी से उपलब्ध हो। बस ये ध्यान रखा जाए कि वे उपयोग के लिए सरल हो और स्थानीय तथा सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक हो। उदाहरण के लिए विभिन्न आवाजों से पहचान कराने के लिए छोटी छोटी खाली बोतलों में अलग अलग प्रकार के अनाज और दालें भरकर उपयोग की जा सकती है या विभिन्न रंगों से परिचय कराने के लिए घर के करीब के पार्क में जाया जा सकता है।
- पुरुषों की भूमिका को मज़बूत करने के लिए उनकी सहभागिता को सुनिश्चित किया जाना चाहिए। पेरेंटिंग वर्कशॉप, सामुदायिक संवाद और सह-शिक्षण सामग्री के माध्यम से गृह-आधारित आरम्भिक बाल विकास शिक्षा में पुरुष भागीदारी को प्रोत्साहित करना लिंग मानदंडों को चुनौती दे सकता है और साझा देखभाल जिम्मेदारियों को बढ़ावा दे सकता है।

इस तरह की भागीदारी परिवार की गतिशीलता को भी मजबूत करती है और महिलाओं पर देखभाल का बोझ कम करती है।

- विभिन्न विभागों और ज़मीनी कार्यकर्ताओं के क्षमता निर्माण में अधिक निवेश करने की आवश्यकता है।
- समर्पित आउटरिच सामग्री और निगरानी के साथ गृह आधारित आरंभिक बाल विकास को बढ़ावा देने सम्बन्धी कदम उठाने चाहिए।
- मंत्रालयों, विभागों, स्थानीय सामाजिक संगठनों आदि के अंतर-क्षेत्रीय संबंधों को मज़बूत करते हुए सफल नवाचारों को अन्य स्थानों पर लागू करने की दिशा में भी सोचा जाना चाहिए।
- समुदाय आधारित निगरानी सर्किल जैसी पहलों का अनुसरण करते हुए अभिभावकों के समूहों के माध्यम से देखभाल करने वालों के बीच सहकर्मी सीखने और समर्थन को बढ़ावा देना चाहिए।
- समान दिशा में काम कर रहे विभिन्न संस्थानों और सामाजिक संस्थानों को एक साथ आकर परस्पर सीखने-सिखाने की दिशा में काम करते हुए पालिसी में आवश्यक बदलावों के लिए पैरवी करनी चाहिए।
- वंचित वर्गों (झुग्गी बस्तियों, आदिवासी समूहों, पलायन करने वाले परिवारों, निर्माण क्षेत्र में कार्य करने वाले कामगारों आदि) के नन्हे बच्चों के लिए कार्यक्षेत्र या बस्ती में ही डे-केयर जैसी सुविधाओं की दिशा में सोचा जा सकता है। कार्यस्थलों पर बच्चों की उचित निगरानी और देखभाल के लिए सही व्यवस्था की जानी चाहिए।
- काम में लगी महिलाएं बच्चों को पूरे दिन में उचित स्तनपान और देखभाल के लिए उपलब्ध हो, इस दिशा में भी सोचा जाना चाहिए। धात्री महिलाएं आराम कर सके और बच्चों को समय दे सके; इसके लिए उनके लिए सहयोग (सहयोग भत्ता के रूप में सम्मानजनक राशि) जैसी पहल भी की जा सकती है।
- सामाजिक व्यवहारगत बदलावों के लिए आधुनिक तकनीक और संचार माध्यमों का उपयोग करते हुए उनकी क्षमताओं का विकास किया जा सकता है। महाराष्ट्र, गुजरात, उत्तरप्रदेश, दिल्ली और उत्तर-पूर्वी राज्यों में कई सामाजिक संस्थाओं ने विभिन्न राज्य सरकारों और शहरी निकायों के साथ मिलकर विभिन्न मोबाइल एप, वीडियो आदि के माध्यम से इस दिशा में काम करना आरम्भ किया है। "पोषण भी- पढाई भी अभियान" पहल ने राजस्थान में दैनिक पोषण और वजन सत्रों में कहानी सुनाने और दृश्य खेल को एकीकृत करके शुरुआती सफलता दिखाई है, जिसमें देखभाल करने वाले और बच्चे के बीच बेहतर बातचीत के वास्तविक प्रमाण हैं।

प्रारंभिक प्रोत्साहन और गृह-आधारित आरम्भिक बाल विकास शिक्षा के माध्यम से ०-३ आयु वर्ग में निवेश करना न केवल विकासात्मक अनिवार्यता है, बल्कि गरीबी और असमानता के चक्र को तोड़ने के लिए एक रणनीतिक अनिवार्यता भी है। सही नीतिगत ध्यान, संसाधन आवंटन और विभिन्न क्षेत्रों में विस्तार के साथ, भारत वास्तव में अपने सबसे कम उम्र के नागरिकों की क्षमता को अनलॉक कर सकता है और अधिक न्यायसंगत भविष्य की नींव रख सकता है। गृह-आधारित आरंभिक बल विकास शिक्षा प्रणालियों को मजबूत करना, क्षमता निर्माण में निवेश करना और महिला और पुरुष दोनों देखभालकर्ताओं को शामिल करना यह सुनिश्चित करेगा कि इन प्रारंभिक वर्षों में कोई भी बच्चा पीछे न छूट जाए। जैसे-जैसे भारत अपने सतत विकास लक्ष्यों और राष्ट्रीय शिक्षा प्रतिबद्धताओं को प्राप्त करने की दिशा में आगे बढ़ता है, ०-३ आयु वर्ग में लक्षित निवेश प्रारंभिक बचपन विकास योजना का एक केंद्रीय स्तंभ बन सकता है।

आख़िरकार बच्चे के मूलभूत अधिकारों में यह भी शामिल है। पहले १००० दिनों में बच्चे का वातावरण प्यार, भाषा, खेल और सुरक्षा से भरपूर होना चाहिए। इस वादे को पूरा करने के लिए नीति को आगे बढ़ाना होगा।

आलेख और फोटो- ओम प्रकाश
प्रारम्भिक बाल विकास विषय विशेषज्ञ, ICLEI साउथ एशिया, उदयपुर कार्यालय